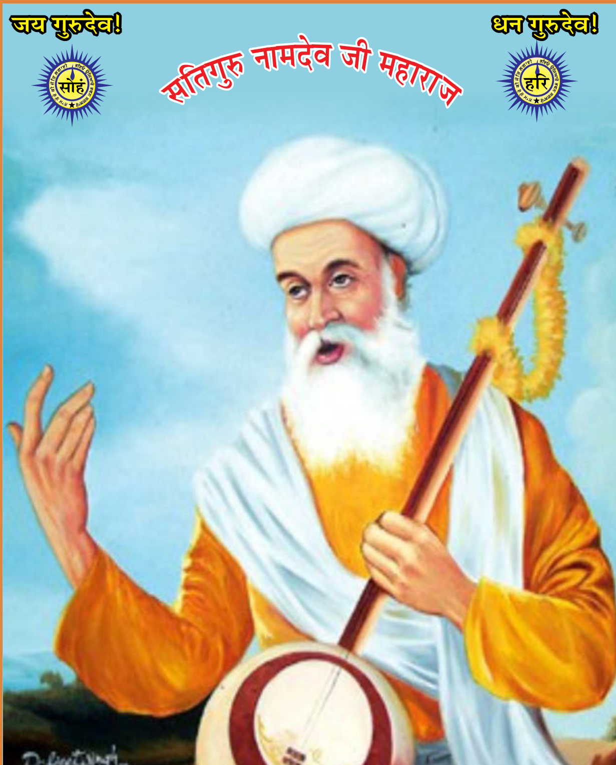

अमृत रस बाणी

श्री गुरु नामदेव जी (हिन्दी)

उपजिओ गिआनु हूआ परगास

श्री गुरु रविदास मिशन प्रचार संस्था पंजाब (रजि:)

(रजि: नं. 179-2006-07)

प्रकाशक : श्री गुरु रविदास मिशन प्रचार संस्था पंजाब (रजि:)

गांव : बिनपालके, निकट भोगपुर, ज़िला जालन्धर (पंजाब)-144201

सतिगुरु नामदेव जी द्वारा अपनी वाणी में मूर्ति पूजा का खंडन

सतिगुरु नामदेव जी अपनी वाणी में प्रभ की उपमा करते हुए प्रभ को अनेकों प्रचिलत नामों जैसे राम, अल्ला, कृष्ण और बीठल व ठाकुर आदि शब्दों से संबोधित करते हैं। इन नामों को पढ़कर कई लोग सतिगुरु जी को देवी देवता, भगवान्, पत्थरों य मूर्तियों के उपासक समझते हैं। परंतु सतिगुरु नामदेव जी स्पष्ट रूप में अपनी वाणी में मूर्ति पूजा का खंडन करते हुए फुरमान करते हैं –

एकै पाथर कीजै भाउ।।
दूजै पाथर धरीऐ पाउ।।
जे ओहु देउ त ओहु भी देवा।।
कहि नामदेउ हम हरि की सेवा।। **(शब्द नं. 7)**

अर्थात् कितनी अजीब बात है कि एक पत्थर को देवता मान के पूजा और प्यार किया जाता है और दूसरे पत्थर को पैरों के नीचे रोंधा जाता है। अगर यह पत्थर जिनकी पूजा की जाती है देवता है तो फिर दूसरा पत्थर भी देवता ही हुआ उसे क्यों पैरों के नीचे रोंधा जाता है? सतिगुरु नामदेव जी फुरमान करते हैं कि मैं तों केवल एक पारब्रह्म प्रभ की बंदगी करता हूँ। आप और फुरमाते हैं –

हिंदू पूजै देहुरा, मुसलमाणु मसीति।।
नामे सोई सेविआ, जह देहुरा न मसीति।।

(शब्द नं. 29)

हिंदु मंदिर को ही प्रभ का घर समझी बैठा है। मुसलमान मसीत को अल्ला का घर मानता है। लेकिन मैं नामेदव उस पारब्रह्म का सिमरन करता हूँ जिसका कोई नियत अस्थान नहीं है। अर्थात् जो हर स्थान में रमिया हुआ है।

अमृत रस बाणी
श्री गुरु नामदेव जी
{हिन्दी}

अगर कोई सभा या व्यक्ति इस को निःशुल्क या लागत मूल्य पर वितरण के लिए अपने नाम पर छपवाना चाहते हैं तो कृप्या संस्था के साथ संपर्क करें और यदि कोई हिन्दी, पंजाबी भाषा के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा में छपवाना चाहता है तो संस्था उनकी आर्थिक सहायता कर सकती है।

प्रकाशक :
श्री गुरु रविदास मिशन प्रचार संस्था पंजाब (रजिः)
गांव : बिनपालके, निकट भोगपुर, ज़िला जालन्धर-144201

हरियाणा में गुटका साहिब मिलने का पता
SANDEEP SINGH KHALSA
H.No. 366A/7 DCM Street, Prem Nagar, Tohana,
Distt. Fatehabad Haryana, Pin Code : 125120
Mobile : 98140-77075

Amrit Ras Bani
Sri Guru Namdev Ji
{Hindi}

प्रथम संस्करण 26 अकतूबर, 2019
(संख्या = 1500)

भेटा = 20 रुपये
भेटा = 10 रुपये (केवल निःशुल्क वितरण हेतु)

प्रकाशक -
श्री गुरु रविदास मिशन प्रचार संस्था पंजाब (रजिः)
गांव बिनपालके, निकट भोगपुर,
ज़िला जालन्धर पंजाब - 144201
मो. 098154-85844, 098725-88620
Email:sgrmpsp@hotmail.com

डिज़ाईनिंग :
वालीया कम्प्यूटर, जालंधर

सूची पत्र

क्र.नं.	विवरण	पृष्ठ
*	सतिगुरु नामदेव जी का संखेप जीवन	7
*	अमृत रस बाणी श्री गुरु नामदेव जी के प्रति विनय	14
*	श्रमा याचना और ध्यवाद	16
*	संसार की सब से महान विचारधारा	18
	1. रागु गउड़ी चेती	
1.	देवा पाहन तारीअले।।	19
	2. रागु आसा	
2.	एक अनेक विआपक...	20
3.	आनीले कुंभ भराईले ऊदक...	21
4.	मनु मेरो गजु...	22
5.	सापु कुंच छोडै...	22
6.	पारब्रहमु जि चीन्हसी...	23
	3. रागु गुजरी	
7.	जौ राजु देहि त कवन बडाई।।	23
8.	मलै न लाछै...	24
	4. रागु सोरठि	
9.	जब देखा तब गावा।	25
10.	पाड़ पड़ौसणि पूछि ले नामा...	26
11.	अणमड़िआ मंदलु बाजै।।	27

	5. रागु धनासरी	
12.	गहरी करि कै नीव खुदाई	28
13.	दस बैरागनि मोहि बसि कीन्ही...	28
14.	मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा...	29
15.	पहिल पुरीए पुंडरक वना।।	31
16.	पतित पावन माधउ...	31
	6. रागु टोडी	
17.	कोई बोलै निरवा कोई बोलै दूरि।।	32
18.	कउन को कलंकु रहिओ...	32
19.	तीनि छंदे खेलु आछै।।	33
	7. रागु तिलंग	
20.	मैं अंधुले की टेक...	34
21.	हले यारां हले यारां खुसिखबरी।।	34
	8. रागु बिलावलु	
22.	सफल जनमु मो कउ गुर कीना।।	35
	9. रागु गोंड	
23.	असुमेध जगने।। तुला पुरख दाने।।	36
24.	नाद भ्रमे जैसे मिरगाए।।	36
25.	मो कउ तारि ले रामा...	37
26.	मोहि लागती तालाबेली।।	38
27.	हरि हरि करत मिटे...	39
28.	भैरउ भूत सीतला धावै।।	40

29.	आजु नामे बीठलु देखिआ...	41
	10. रागु रामकली	
30.	आनीले कागदु काटीले गूडी आकास...	42
31.	वेद पुरान सासत्र आनंता...	43
32.	माइ न होती बापु न होता...	44
33.	बानासी तपु करै...	44
	11. रागु माली गउड़ा	
34.	धनि धनि ओ राम बेनु बाजै।।	46
35.	मेरो बापु माधउ तू धनु केसो...	46
36.	सभै घट रामु बोलै रामा बोलै।।	47
	12. रागु मारु	
37.	चारि मुकति चारै सिधि...	48
	13. रागु भैरउ	
38.	रे जिहबा करउ सत खंड।।	49
39.	पर धन पर दारा परहरी।।	50
40.	दूधु कटोरे गडवै पानी।।	50
41.	मै बउरी मेरा रामु भतारु।।	51
42.	कबहू खीरि खाड धीउ न भावै।।	52
43.	हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ।।	52
44.	जैसी भूखे प्रीति अनाज।।	53
45.	घर की नारि तिआगै अंधा।।	54
46.	संडा मरका जाइ पुकारे।।	55

47.	सुलतानु पूछै सुनु बे नामा।।	56
48.	जउ गुरदेउ त मिलै मुरारि।।	59
49.	आउ कलंदर केसवा।।	61
	14. रागु बसंत	
50.	साहिबु संकटवै सेवकु भजै।।	62
51.	लोभ लहरि अति नीझर बाजै।।	63
52.	सहज अवलि धूड़ि मणी...	64
	15. रागु सारंग	
53.	काएं रे मन बिखिआ बन जाइ।।	64
54.	बदहु की न होड...	65
55.	दास अनिंन मेरो निज रूप।।	66
	16. रागु मलार	
56.	सेवीले गोपाल राइ अकुल निरंजन।।	67
57.	मो कउ तूं न बिसारि...	69
	17. रागु कानड़ा	
58.	ऐसो रम राइ अंतरजामी।।	69
	18. रागु प्रभाती	
59.	मन की बिरथा मनु ही जानै...	70
60.	आदि जुगादि जुगादि जुगो जुगु...	71
61.	अकुल पुरुख इकु चलितु उपाइआ।।	72

सतिगुरु नामदेव जी का संखेप जीवन

सतिगुरु नामदेव जी का जन्म

नामदेव का अर्थ है नाम (शब्द) ही देव है।

परम संत सतिगुरु नामदेव जी का जन्म कार्तिक शुक्ला एकादशी सम्वत् 1327 (26 अक्तूबर 1270 ई०) दिन रविवार सूर्योदय के समय करढ़ के पास गाँव नरसी बामणी ज़िला सितारा (मराठवाड़ा) महाराष्ट्र में हुआ। गाँव नरसी, कृष्णा नदी के किनारे, कहाड़ रेलवे स्टेशन के पास पूना से मिराज जाने वाली रेलवे लाईन के निकट है। सरकार ने अब ''नरसी बामणी'' का नाम बदलकर ''नरसी नामदेव'' रख दिया है। नरसी नामदेव ज़िला हिंगोली राज्य महाराष्ट्र मैं है।

आप के पिता जी का नाम दामाशेट और माता जी का नाम गोना बाई (गोणाई) था। आपका बचपन का नाम 'नामा' था। आपका जन्म छींबा बिरादरी (शुद्र जाति) में हुआ और आपका वंश दर्जी का काम करता था। मराठी में दर्जी को 'छींपी' कहते हैं।

''छीपे के घरि जनमु दैला गुर उपदेसु भैला।।
संतह कै परसादि नामा हरि भेटुला।।''

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ४८६)

वंशावली (कुर्सीनामा)

परम संत नामदेव जी के परिवार की वंशावली (कुर्सीनामा) इस प्रकार है–

यदु शेट जी

↓

हरशेट जी

↓

गोपालशेट जी

↓

रघशेट जी

↓

गोबन्दिशेट जी

↓

नरहरशेट जी

↓

दामाशेट जी

↓

नामदेव जी

दामाशेट और गोणाई जी का परिवार

नामदेव (पुत्र) आऊ बाई (पुत्री)

नारा (नारायण दास) (पुत्र) | महादा (महादेव) | गोंदा (गोविन्द दास) | विठा (विट्ठल दास) | लिंबा बाई (पुत्री) | जनाबाई (दासी)

लाडा बाई (पत्नी) | गोडा बाई (पत्नी) | येसा बाई (पत्नी) | साखरा बाई (पत्नी)

सतिगुरु नामदेव जी के गुरु

महात्मा विशोभा खेचर जी पंढरपुर के निकट गाँव वदवल के वासी थे। सतिगुरु नामदेव जी महात्मा विशोभा खेचर जी को मल्लिकार्जुन मन्दिर के निकट मिले। महात्मा विशोभा खेचर जी शिवलिंग पर पैर रखकर सो रहे थे। सतिगुरु नामदेव जी ने उस वृद्ध पुरुष को शिवलिंग से पैर उठाने के लिए कहा परन्तु उस वृद्ध ने बुढ़ापे की हालत में कमजोर शब्दों में कहा–

''मेरे प्राणों को क्यों जगाया
ईश्वर के बिना कौन सी जगह खाली है।

सोचकर, देख, नामदेव
जहाँ ईश्वर नहीं है वहाँ मेरे पैर रख।
इसका अर्थ पूरी तरह सोच समझ ले।''
''नामदेव देखता है उधर ईश्वर-ही-ईश्वर है।
कोई खाली जगह नहीं दिखाई दी।।'' -अभंग १०१८

यह देखकर सतिगुरु नामदेव जी को ज्ञात हो गया कि परमात्मा सर्वव्यापक है और वह कण-कण में विराजमान है। वह किसी मूर्ति, पत्थर या फिर छोटी बढ़ी इमारतों में नहीं अपितु हर जगह मौजूद है। यदि पत्थर भगवान होता तो पहुंचे हुए दरवेश विशोभा खेचर जी कभी भी उस पर अपने पैर रखने की भूल नहीं करते। तब से सतिगुरु नामदेव जी की मानसिकता ही बदल गई।

''एकै पाथर कीजै भाउ।। दूजै पाथर धरीऐ पाउ।।
जो ओहु देउ त ओहु भी देवा।।
कहि नामदेव हम हरि की सेवा।।''

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ५२५)

सतिगुरु नामदेव जी के समकालीन सन्त

1. गोरा कुम्हार	2. सावंता माली
3. नरहरि सुनार	4. विसोबा खेचर
5. चोखा मेला	6. त्रिलोचन
7. परिसा भागवत	8. बंका महार
9. निवृत्तिनाथ	10. ज्ञानेश्वर (ज्ञानदेव)

11. सोपानदेव
12. मुक्ताबाई
13. जनाबाई
14. जोगा परमानन्द
15. राका कुम्हार
16. जगमित्र नागा
17. सोयराबाई
18. चांगदेव
19. सच्चिदानंद

इस मण्डली में छुत-अछूत, स्त्री-पुरुष एवं हर वर्ग के लोग बिना किसी भेदभाव के शामिल थे।

नामदेव जी सत्संग करते हुए पंढरपुर से गोकुल, मथुरा, अयोध्या, गया, काशी, वृन्दावन से दिल्ली पहुँच गए। वृन्दावन में स्वामी विष्णु दास जी (ब्राह्मण) नामदेव जी से कथा सुनकर आपके शिष्य बन गए। दिल्ली में भ्रमण करते हुए हरिद्वार गए और फिर धीरे-धीरे पंजाब पहुँच गए। घूमते-घूमते भट्टीवाले गाँव पहुँचे। चारों तरफ जंगल ही जंगल थे। आपने भट्टीवाल छोड़कर आगे जंगल में कुटिया बना ली और वहाँ पर ही भक्ति में लीन रहने लगे। धीरे-धीरे आस-पास के गाँव के लोग सतिगुरु नामदेव जी के पास आने लगे और इस जंगल की जगह में घुमाण गाँव बस गया। जिस स्थान पर आप नाम सिमरन करते थे, वहाँ 1770 ई० में सरदार जस्सा सिंह रामगढ़ीया ने धार्मिक स्थल बनवाया था।

सतिगुरु नामदेव जी का ज्योति जोत समाना

परम संत नामदेव जी ने 80 वर्ष की आयु में आषाढ़वदी (माघ) 2, 1407 विक्रमी अर्थात् जुलाई 3, 1350 सम्वत् ईस्वी, दिन शनिवार को समाधि ले ली। ब्रह्म ज्योति के साथ

ज्योति मिल गई। ज्योति जोत समाने के बारे में कुछ विद्वानों के विचारों में मतभेद है। कुछ बुद्धिजीवियों का विचार है, कि नामदेव जी विट्ठल की शरण में रहने की इच्छा से वापिस पंढरपुर आ गए थे। नामदेव जी ने पंढरपुर के विट्ठल मन्दिर के प्रवेश द्वार पर ''नामदेवजी पाथरी'' (नामदेव की सीढ़ी) नाम से स्थान, जहाँ उन्होंने 80 वर्ष की आयु, 1350 ईस्वी में देह त्यागी, उनकी समाधि का स्थान माना जाता है। परम संत नामदेव जी के शिष्य परिसा भागवत ने एक अभंग द्वारा इस बात का वर्णन किया है-

कुछ विद्वानों का विचार है, कि नामदेव जी ने घुमाण गाँव बसाया था और जीवन का अन्तिम समय वहाँ ही व्यतीत किया था। गाँव भद्देवाल, ज़िला गुरदासपुर में आप जी की कुटिया है।

सतिगुरु नामदेव जी के यादगार स्थान

परम संत नामदेव जी के नाम पर अलग-अलग स्थानों पर कई यादगार स्थान स्थापित हुए हैं। उनमें से कुछ एक निम्नलिखित हैं-

1. आप जी के जन्म स्थान गाँव नरसी बामनी ज़िला सितारा में मन्दिर स्थापित है।

2. अवंड्या नागनाथ के मन्दिर के निकट आप जी के नाम पर निशानदेह बनी हुई है। यहाँ पर आपने महात्मा विशोभा खेचर नाथ जी से गुरु दीक्षा धारण की थी। इस मन्दिर का द्वार घूमकर नामदेव जी की ओर हो गया था।

3. ज़िला सहारनपुर के गाँव ज्वालापुर, हरिद्वार के निकट आपके स्मृति चिन्ह के तौर पर एक मठ बना हुआ है।

4. संत नामदेव जी पंजाब में पहली बार गाँव भूत विंड, ज़िला अमृतसर में आए थे। यहाँ पर बहुरदास जी आपकी प्रेमा-भक्ति में रंगे गए और आप जी से नाम की बख्शिश प्रापत की। यहाँ पर आपका स्मारक स्थापित है।

5. भट्टीवाल गाँव ज़िला गुरदासपुर, पंजाब में है। यहाँ पर आपका यादगार स्थान ''नामेआणा'' के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पर नामदेव जी के नाम पर सरोवर एवं कुआँ मौजूद है।

6. घुमाण गाँव गुरदासपुर, पंजाब में आपके नाम पर गुरुद्वारा ''देहुरा साहिब'' प्रसिद्ध है। इस स्थान पर प्रत्येक वर्ष लोहड़ी और माघी वाले दिन मेला लगता है।

7. पंडरपुर के विट्ठल मन्दिर के प्रवेश द्वार पर ''नामदेवांची पायरी'' (नामदेव की सीढ़ी) नाम से स्थान, आप की समाधि का स्थान माना जाता है।

8. बीकानेर के निकट ''कौलाद जी'' गाँव के पास एक कुआँ है जिसे ''नामदेव जी का कुआँ'' के नाम से जाना जाता है।

गुरु चरणा का दास
जसबीर जस्सी
गांव व डाकखाना, तलहन,
ज़िला जालंधर, पंजाब, भारत

अमृत रस बाणी श्री गुरु नामदेव जी के प्रति विनय

आप के हाथों में प्रस्तुत 'अमृत रस बाणी श्री गुरु नामदेव जी' (हिन्दी) के 'आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' में से लिए गए 61 शब्द है। इस से शब्द नं 01 से लेकर शब्द नं. 61 तक आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में संकलित संपूर्ण बाणी दी गई है।

बाणी पढ़ने की विधि – गुरु जी की बाणी में जहां कहीं भी विश्राम आता है वहां थोड़ा, अधिक रिक्त स्थान दिया गया है। पाठकों से विनय है कि जहां-जहां भी अधिक रिक्त स्थान आता है और जहां पंक्ति समाप्त करके अगली पंक्ति दी गई है वहां थोड़ा रुक-रुक कर पाठ करें और यहां संपूर्ण पंक्ति समाप्ति का चिन्ह है (।।) वहाँ अधिक समय रुक कर पाठ करें तांकि बाणी का शुद्धि उच्चारण हो सके और बाणी पढ़ने-सुनने वालों को समझ आ सके।

गुटका साहिब की संभाल और नितनेम – इस गुटके को साफ और सुन्दर कपड़े में लपेट कर, गुटका पढ़ने

वाली पीढ़ी पर सज़ा कर, किसी ऊँचे और साफ़ स्थान पर रखें। प्रातः अमृत समय स्नान करके या हाथ-मुँह धोकर इस पावन बाणी में से ऊंची ध्वनि में शब्द पढ़ो। अपनी श्रद्धा और समय अनुसार शब्द पाँच, ग्यारह, इक्कीस या पूरे शब्द ही पढ़े जा सकते हैं। शब्द पढ़ने के उपरान्त सत्यनाम का स्मरण करो और फिर प्रार्थना करो। सायं को भी इसी प्रकार करो। यह नितनेम प्रति दिन नियत समय पर ही करो।

इस गुटका साहिब में अपनी संस्था, गांव या गुरु घर का इतिहास छपवाएं - यदि आप यह गुटका साहिब संगतों में निःशुल्क वितरण करना चाहते हो तो हमारे पास से 10 रु. के हिसाब से मिल सकता है। इस में आप के नगर के गुरु घर का चित्र और जानकारी, गांव या आपकी संस्था की जानकारी और गतिविधियां प्रकाशित की जा सकती हैं। आप घर पर बैठे ही 50 रुपये में तीन गुटका साहिब मंगवा सकते हो। इस के लिए आप संस्था के **मोबाईल नंबर 098154-85844** पर संपर्क कर सकते हो।

क्षमा याचना और धन्यवाद

इस अगम्य, महान बाणी को इस गुटका साहिब में बाणी संकलित करते हुए यह कोशिश की गई है कि इसमें कोई भी गलती ना हो फिर भी अगर कोई गलती रह गई हो तो हम श्री गुरु नामदेव जी तथा आप सब संगत से क्षमा चाहते हैं। अपने अमूल्य सुझाव लिख कर भेजने की कृपा करें। जिनको हम आने वाले प्रकाशन में शामिल करने की कोशिश करेंगे। हम आप के तह दिल से आभारी होंगे। हम तह दिल से आभारी हैं माननीय संदीप सिंघ खालसा वासी टोहाना राज्य हरियाणा जी का जिस की अथाह श्रद्धा और उदम से यह गुटका साहिब आप जी के हाथों में है। संदीप सिंघ जी की इच्छा है कि अगले साल यह गुटका साहिब व्याखया सहित प्रकाशित कराया जाए। सतिगुरु जी उनकी सारी शुभ भावनाओं को पूरा करें। धन्यावाद सहित।

जय गुरुदेव! धन गुरुदेव!

गुरु पंथ का दास

चरनजीत सिंह बिनपालके

मोबाईल नं. - 098148-39944

संस्था को सहयोग की प्रार्थना

श्री गुरु रविदास जी के मिशन प्रचार के लिए किए जाते सभी कार्य संस्था के सदस्यों द्वारा वार्षिक चंदे, कौमी दर्दमंदों और गुरु मिशन प्रेमियों के सहयोग से ही निपटाए जाते हैं। संस्था के बहुत से ऐसे कार्य अभी अधूरे पड़े हैं। सो आप सभी को पुरज़ोर प्रार्थना है कि संस्था को अधिक से अधिक आर्थिक सहायता दें तांकि श्री गुरु रविदास जी के मिशन को जन-जन तक पहुंचाया जा सके। इसलिए आप मनीआर्डर, चैक, बैंक ड्राफ्ट या संस्था के बैंक अकाऊंट में सीधा ही सेवा शुल्क दे सकते हो। संस्था के बैंक अकाऊंट संबंधी विवरण इस प्रकार है -

SRI GURU RAVIDASS

MISSION PARCHAR SANSTHA

PUNJAB (REGD.)

V.P.O. Binpalke, Via Bhogpur, Distt Jalandhar

ACCOUNT NO. 32717505525

IFS. CODE NO. SBIN 0010122

CIF NO. 86549122040

STATE BANK OF INDIA

Bhogpur, Distt. JALANDHAR (PUNJAB)

संसार की सब से महान विचारधारा

भारत के मूलवासी, आदिवासी समाज को यह बात मन में टिका लेनी चाहिए कि तुम संसार के सब से महान लोग हो। तुम भारत के मूल निवासी हो। सब से पूर्व तुम्हारे पूर्वजों ने संसार की रूढ़ीवादी, पक्षपाती और अमानवीय, धार्मिक, समाजिक मूल्यों को तुच्छ जान कर एक पारब्रह्म परमात्मा के संकल्प की वैज्ञानिक विश्वव्यापी, विश्व सांझेदारी, एकता भाईचारक सांझ से ओतप्रोत विचारधारा प्रदान की है।

गुरु रविदास जी के अनुसार, **''रेचित चेत अचेत।। काहे न बालमीकिह देख''**।। और **''नामेदव, कबीर, तिलोचन, सधना, सैन तरै।।''** हमारे रहिबर इस विचारधारा को पैदा करके स्वयं मुक्त हुए और हमारे लिए मुक्ति का मार्ग बता कर गए हैं। तुम्हें इस संसार में लुक छुप कर नहीं प्रत्युत् सिर ऊंचा करके मान-सम्मान से जीवत रहना चाहिए क्योंकि तुम इन महान पूर्वजों का अंश हो, सेवक हो। आओ! हम सब इन महान अग्रगामियों की विचारधारा को समझें, विचारें, अपने जीवन में अपनाएं और अपने बच्चों अपने समाज को इस से परिचय करवाएं और सतगुरु रविदास, सतगुरु वाल्मीकि, सतगुरु नामदेव, सतगुरु कबीर, सतगुरु त्रिलोचन, सतगुरु सधना, सतगुरु सैन की संतान और सेवक एक झंडे के नीचे एकत्र होकर अपने बिखरते जा रहे संविधानिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करें।

शब्द - १

रागु गउड़ी चेती बाणी नामदेउ जीउ की

१ओं सतिगुरु प्रसादि।।

देवा पाहन तारीअले।।
राम कहत जन कस न तरे।।१।। रहाउ।।
तारीले गनिका बिनु रूप कुबिजा
बिआधि अजामलु तारीअले।।
चरन बधिक जन तेऊ मुकति भए।।
हउ बलि बलि जिन राम कहे।।१।।
दासी सुत जनु बिदरु सुदामा उग्रसैन कउ राज दीए।।
जप हीन तप हीन कुल हीन क्रम हीन नामे
के सुआमी तेऊ तरे।।२।।१।।

(श्री गुरू ग्रंथ साहिब, पृष्ठ ३४५)

शब्द - २

"१ओ सतिनामु करता पुरखु निरभओ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि।।
रागु आसा बाणी भगता की

कबीर जीउ नामदेउ जीउ रविदास जीउ।।"

आसा बाणी श्री नामदेउ जी की

एक अनेक विआपक पूरक जत देखउ तत सोई।।

माइआ चित्र बचित्र बिमोहित बिरला बूझै कोई।।१।।
सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है गोबिंद
बिनु नहीं कोई।।
सुतु एकु मणि सत सहंस जैसे ओति पोति
प्रभु सोई।।१।रहाउ।।
जल तरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिंन न होई।।
इहु परपंचु पारब्रहम की लीला बिचरत
आन न होई।।२।।
मिथिआ भरमु अरु सुपन मनोरथ सति
पदारथु जानिआ।।
सुक्रित मनसा गुर उपदेसी जागत ही
मनु मानिआ।।३।।
कहत नामदेउ हरि की रचना देखहु रिदै बीचारी।।
घट घट अंतरि सरब निरंतरि केवल
एक मुरारी।।४।।१।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ४८५)

शब्द - ३

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

आसा बाणी श्री नामदेउ जी की

आनीले कुंभ भराईले ऊदक ठाकुर कउ
इसनानु करउ।।
बइआलीस लख जी जल महि होते बीठलु
भैला काइ करउ।।१।।
जत्र जाउ तत बीठलु भैला।।
महा अनंद करे सद केला।।१।रहाउ।।
आनीले फूल परोईले माला ठाकुर की हउ पूज करउ।।
पहिले बासु लई है भवरह बीठल भैला
काइ करउ।।२।।
आनीले दूधु रीधाईले खीरं ठाकुर कउ
नैवेदु करउ।।
पहिले दूधु बिटारिओ बछरै बीठलु भैला
काइ करउ।।३।।
ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही।।
थान थनंतरि नामा प्रणवै पूरि रहिओ
तूं सरब मही।।४।।२।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ४८५)

शब्द - ४

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

आसा बाणी श्री नामदेउ जी की

मनु मेरो गजु जिहबा मेरी काती।।
मपि मपि काटउ जम की फासी।।१।।
कहा करउ जाती कह करउ पाती।।
राम को नामु जपउ दिन राती।।१।।रहाउ।।
रांगनि रांगउ सीवनि सीवउ।।
राम नाम बिनु घरीअ न जीवउ।।२।।
भगति करउ हरि के गुन गावउ।।
आठ पहर अपना खसमु धिआवउ।।३।।
सुइने की सूई रूपे का धागा।।
नामे का चितु हरि सउ लागा।।४।।३।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ४८५)

शब्द - ५

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

आसा बाणी श्री नामदेउ जी की

सापु कुंच छोडै बिखु नहीं छाडै।।
उदक माहि जैसे बगु धिआनु माडै।।१।।
काहे कउ कीजै धिआनु जपंना।।

जब ते सुधु नाही मनु अपना।।१।रहाउ।।
सिंघच भोजनु जो नरु जानै।।
ऐसे ही ठगदेउ बखानै।।२।।
नामे के सुआमी लाहि ले झगरा।।
राम रसाइन पीओ दे दगरा।।३।।४।।
(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ४८५-४८६)

शब्द - ६

१ओं सतिगुर प्रसादि।।
आसा बाणी श्री नामदेउ जी की

पारब्रहमु जि चीन्हसी आसा ते ना भावसी।।
रामा भगतह चेतीअले अचिंत मनु राखसी।।१।।
कैसे मन तरहिगा रे संसारु सागरु बिखै को बना।।
झूठी माइआ देखि कै भूला रे मना।।१।रहाउ।।
छीपे के घरि जनमु दैला गुर उपदेसु भैला।।
संतह कै परसादि नामा हरि भेटुला।।२।।५।।
(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ४८६)

शब्द - ७

गूजरी श्री नामदेव जी के पदे घरु १
१ओं सतिगुर प्रसादि।।

जौ राजु देहि त कवन बडाई।।

जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई।।१।।
तूं हरि भजु मन मेरे पदु निरबानु।।
बहुरि न होइ तेरा आवन जानु।।१।।रहाउ।।
सभ तै उपाई भरम भुलाई।।
जिस तूं देवहि तिसहि बुझाई।।२।।
सतिगुरु मिलै त सहसा जाई।।
किसु हउ पूजउ दूजा नदरि न आई।।३।।
एकै पाथर कीजै भाउ।। दूजै पाथर धरीऐ पाउ।।
जे ओहु देउ त ओहु भी देवा।।
कहि नामदेउ हम हरि की सेवा।।४।।१।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ५२५)

शब्द - ८

गूजरी श्री नामदेव जी के पदे घरु १

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

मलै न लाछै पार मलो परमलीओ बैठो री आई।।
आवत किनै न पेखिओ कवनै जाणै री बाई।।१।।
कउणु कहै किणि बूझीऐ रमईआ आकुलु
री बाई।।१।।रहाउ।।
जिउ आकसै पंखीअलो खोजु निरखिओ न जाई।।
जिउ जल माझै माछलो मारगु पेखणो न जाई।।२।।

जिउ आकासै घड़ूअलो म्रिग त्रिना भरिआ।।
नामे चे सुआमी बीठलो जिनि तीनै
जरिआ।।३।।२।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ५२५)

शब्द - ९

रागु सोरठि बाणी भगत नामदे जी की घरु २

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

जब देखा तब गावा। तउ जन धीरजु पावा।।१।।
नादि समाइलो रे सतिगुरु भेटिले देवा।।१।रहाउ।।
जह झिलि मिलि कारू दिसंता।।
तह अनहद सबद बजंता।।
जोती जोति समानी।। मै गुर परसादी जानी।।२।।
रतन कमल कोठरी।। चमकार बीजुल तही।।
नेरे नाही दूरि।। निज आतमै रहिआ भरपूरि।।३।।
जह अनहत सूर उज्यारा।।
तह दीपक जलै छंछारा।।
गुर परसादी जानिआ।।
जनु नामा सहज समानिआ।।४।।१।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ६५६-६५७)

शब्द - १०

रागु सोरठि बाणी भगत नामदे जी की घरु ४

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

पाड़ पड़ोसणि पूछि ले नामा का पहि छानि छवाई हो।।
तो पहि दुगणी मजूरी दैहउ मो कउ बेढी
देहु बताई हो।।१।।
री बाई बेढी देनु न जाई।।
देखु बेढी रहिओ समाई।।
हमारै बेढी प्रान अधारा।।१।।रहाउ।।
बेढी प्रीति मजूरी मांगै जउ कोऊ
छानि छवावै हो।।
लोग कुटंब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी
आवै हो।।२।।
ऐसो बेढी बरनि न साकउ सभ अंतर सभ ठाई हो।।
गूंगै महा अंम्रित रसु चाखिआ पूछे कहनु न
जाई हो।।३।।
बेढी के गुण सुनि री बाई जलधि बांधि ध्रू
थापिओ हो।।
नामे के सुआमी सीअ बहोरी लंक भभीखण
आपिओ हो।।४।।२।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ६५७)

शब्द - ११

रागु सोरठि बाणी भगत नामदे जी की घरु ३

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

अणमड़िआ मंदलु बाजै।।
बिनु सावण घनहरु गाजै।।
बादल बिनु बरखा होई।।
जउ ततु बिचारै कोई।।१ ।।
मो कउ मिलिओ रामु सनेही।।
जिह मिलिए देह सुदेही।।१ ।। रहाउ।।
मिलि पारस कंचनु होइआ।।
मुख मनसा रतनु परोइआ।।
निज भाउ भइआ भ्रमु भागा।।
गुर पूछे मनु पतीआगा।।२ ।।
जल भीतरि कुंभ समानिआ।।
सभ रामु एकु करि जानिआ।।
गुर चेले है मनु मानिआ।।
जन नामै ततु पछानिआ।।३ ।।३ ।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ६५७)

शब्द - १२

धनासरी बाणी भगत नामदेव जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

गहरी करि कै नीव खुदाई ऊपरि मंडप छाए।।
मारकंडे ते को अधिकाई जिनि त्रिण धरि मूंड बलाए।।१ ।।
हमरो करता रामु सनेही।।
काहे रे नर गरबु करत हहु बिनसि जाइ
झूठी देही।।१ ।। रहाउ।।
मेरी मेरी कैरउ करते दुरजोधन से भाई।।
बारह जोजन छत्रु चलै था देही गिरझन खाई।।२ ।।
सरब सुोइन की लंका होती रावन से अधिकाई।।
कहा भइओ दरि बांधे हाथी खिन महि भई पराई।।३ ।।
दुरबासा सिउ करत ठगउरी जादव ए फल पाए।।
क्रिपा करी जन अपुने ऊपरि नामदेउ हरि
गुन गाए।।४।।१ ।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ६९२-६९३)

शब्द - १३

धनासरी बाणी भगत नामदेव जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

दस बैरागनि मोहि बसि कीन्ही पंचहु का मिट नावउ।।

सतरि दोइ भरे अंम्रित सरि बिखु कउ
मारि कढावउ।।१।।
पाछै बहुरि न आवनु पावउ।।
अंम्रित बाणी घट ते उचरउ आतम
कउ समझावउ।।१।। रहाउ।।
बजर कुठारु मोहि है छीनां करि मिंनति
लगि पावउ।।
संतन के हम उलटे सेवक भगतन ते डरपावउ।।२।।
इह संसार ते तब ही छूटउ जउ माइआ नह लपटावउ।।
माइआ नामु गरभ जोनि का तिह
तजि दरसनु पावउ।।३।।
इतु करि भगति करहि जो जन तिन भउ
सगल चुकाईऐ।।
कहत नामदेउ बाहरि किआ भरमहु इह संजम
हरि पाईऐ।।४।।२।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ६९३)

शब्द - १४

धनासरी बाणी भगत नामदेव जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला।।

जिउ कुरंक निसि नादु बालहा तिउ मैरै
मनि रामईआ।।१।।
तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रंग रूड़ो
मेरो रामईआ।।१।। रहाउ।।
जिउ धरणी कउ इंद्रु बालहा कुसम बासु
जैसे भवरला।।
जिउ कोकिल कउ अंब बालहा तिउ मैरै
मनि रामईआ।।२।।
चकवी कउ जैसे सूरु बालहा मान सरोवर हंसुला।।
जिउ तरुणी कउ कंतु बालहा तिउ मेरे
मनि रामईआ।।३।।
बारिक कउ जैसे खीरु बालहा चात्रिक मुख
जैसे जलधरा।।
मछुली कउ जैसे नीरु बालहा तिउ मेरे
मनि रामईआ।।४।।
साधिक सिध सगल मुनि चाहहि बिरले
काहू डीठुला।।
सगल भवण तेरो नामु बालहा तिउ नामे
मनि बीठुला।।४।।३।।
(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ६९३)

शब्द – १५

धनासरी बाणी भगत नामदेव जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

पहिल पुरीए पुंडरक वना।। ता चे हंसा सगले जनां।।
क्रिस्ना ते जानऊ हरि हरि नाचंती नाचना।।१।।
पहिल पुरसाबिरा।।
अथोन पुरसादमरा।। असगा अस उसगा।।
हरि का बागरा नाचै पिंधी महि सागरा।।१।। रहाउ।।
नाचंती गोपी जंना।। नईआ ते बैरे कंना।।
तरकु न चा।। भ्रमीआ चा।
केसवा बचउनी अईए मईए एक आन जीउ।।२।।
पिंधी उभकले संसारा।।
भ्रमि भ्रमि आए तुम चे दुआरा।।
तू कुनु रे।। मै जी।। नामा।।
हो जी। आला ते निवारणा जम कारणा।।३।।४।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ६९३-६९४)

शब्द – १६

धनासरी बाणी भगत नामदेव जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

पतित पावन माधउ बिरदु तेरा।।

धंनि ते वै मुनि जन जिन धिआइओ हरि प्रभु मेरा।।१।।
मेरे माथै लागी ले धूरि गोबिंद चरनन की।।
सुरि नर मुनि जन तिनहू ते दूरि।।१।। रहाउ।।
दीन का दइआलु माधौ गरब परहारी।।
चरन सरन नामा बलि तिहारी।।२।।५।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ६९४)

शब्द - १७

टोडी बाणी भगत नामदेव जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

कोई बोलै निरवा कोई बोलै दूरि।।
जल की माछुली चरै खजूरि।।१।।
कांइ रे बकबादु लाइओ।।
जिनि हरि पाइओ तिनहि छपाइओ।।१।। रहाउ।।
पंडितु होइ कै बेदु बखानै।।
मूरखु नामदेउ रामहि जानै।।२।।१।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ७१८)

शब्द - १८

टोडी बाणी भगतां की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

कउन को कलंकु रहिओ राम नामु लेत ही।।

पतित पवित भए रामु कहत ही।।१।। रहाउ।।
राम संगि नामदेव जन कउ प्रतगिआ आई।।
एकादसी ब्रतु रहै काहे कउ तीरथ जाई।।१।।
भनति नामदेउ सुक्रित सुमति भए।।
गुरमति रामु कहि को को न बैकुंठि गए।।२।।२।।
(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ७१८)

शब्द - १९

टोडी बाणी भगतां की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

तीनि छंदे खेलु आछै।।१।। रहाउ।।
कुंभार के घर हांडी आछै राजा के घर सांडी गो।।
बामन के घर रांडी आछै रांडी सांडी हांडी गो।।१।।
बाणीए के घर हींगु आछै भैसर माथै सींगु गो।।
देवल मधे लीगु आछै लीगु सीगु हीगु गो।।२।।
तेली के घर तेलु आछै जंगल मधे बेल गो।।
माली के घर केल आछै केल बेल तेल गो।।३।।
संतां मधे गोबिंदु आछै गोकल मधे सिआम गो।।
नामे मधे रामु आछै राम सिआम गोबिंद गो।।४।।३।।
(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ७१८)

शब्द - २०

तिलंग बाणी भगतां की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

मैं अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा।।
मै गरीब मै मसकीन तेरा नामु है
अधारा।।१।। रहाउ।।
करीमां रहीमां अलाह तू गंनी।।
हाजरा हजूरि दरि पेसि तूं मंनी।।१।।
दरीआउ तू दिहंद तू बिसीआर तू धनी।।
देहि लेहि एकु तूं दिगर को नहीं।।२।।
तूं दानां तूं बीनां मैं बीचारु किआ करी।।
नामे चे सुआमी बखसंद तूं हरी।।३।।१।।२।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ७२७)

शब्द - २१

तिलंग बाणी भगतां की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

हले यारां हले यारां खुसिखबरी।।
बलि बलि जांउ हउ बलि बलि जांउ।।
नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउ।।१।। रहाउ।।
कुजा आमद कुजा रफती कुजा मे रवी।।

द्वारिका नगरी रासि बुगोई।।१।।
खूबु तेरी पगरी मीठे तेरे बोल।।
द्वारिका नगरी काहे के मगोल।।२।।
चंदी हजार आलम एकल खानां।।
हम चिनी पातिसाह सांवले बरनां।।३।।
असपति गजपति नरह नरिंद।।
नामे के स्वामी मीर मुकंद।।४।।२।।३।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ७२७)

शब्द - २२

बिलावलु बाणी भगत नामदेव जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

सफल जनमु मो कउ गुर कीना।।
दुख बिसारि सुख अंतरि लीना।।१।।
गिआन अंजनु मो कउ गुरि दीना।।
राम नाम बिनु जीवनु मन हीना।।१।।रहाउ।।
नामदेइ सिमरनु करि जानां।।
जगजीवन सिउ जीउ समानां।।२।।१।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ८४७-८५८)

शब्द - २३

रागु गोंड बाणी नामदेउ जी की घरु

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

असुमेध जगने।। तुला पुरख दाने।।
प्राग इसनाने।।१ ।।
तउ न पुजहि हरि कीरति नामा।।
अपुने रामहि भजु रे मन आलसीआ।।१ ।। रहाउ।।
गइआ पिंडु भरता।। बनारसि असि बसता।।
मुखि बेद चतुर पड़ता।।२ ।।
सगल धरम अछिता।। गुर गिआन इंद्री द्रिड़ता।। खटु करम सहित रहता।।३ ।।
सिवा सकति संबादं।। मन छोडि छोडि सगल भेदं।। सिमरि सिमरि गोविंदं।।
भजु नामा तरसि भव सिंधं।।४।।१ ।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ८७३)

शब्द - २४

रागु गोंड बाणी नामदेउ जी की घरु

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

नाद भ्रमे जैसे मिरगाए।।
प्रान तजे वा को धिआनु न जाए।।१ ।।

ऐसे रामा ऐसे हेरउ।।
रामु छोडि चितु अनत न फेरउ।।१।। रहाउ।।
जिउ मीना हेरै पसूआरा।।
सोना गढते हिरै सुनारा।।२।।
जिउ बिखई हेरै पर नारी।।
कउडा डारत हिरै जुआरी।।३।।
जह जह देखउ तह तह रामा।।
हरि के चरन नित धिआवै नामा।।४।।२।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ८७३)

शब्द - २५

रागु गोंड बाणी नामदेउ जी की घरु

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

मो कउ तारि ले रामा तारि ले।।
मै अजानु जनु तरिबे न जानउ बाप बीठुला
बाह दे।।१।। रहाउ।।
नर ते सुर होइ जात निमख मै सतिगुर
बुधि सिखलाई।।
नर ते उपजि सुरग कउ जीतिओ सो अवखध
मै पाई।।१।।
जहा जहा धूअ नारदु टेके नैकु टिकाबहु मोहि।।

तेरे नाम अविलंबि बहुतु जन उधरे नामे की
निज मति एह।।२।।३।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ८७३-८७४)

शब्द - २६

रागु गोंड बाणी नामदेउ जी की घरु

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

मोहि लागती तालाबेली।।
बछरे बिनु गाइ अकेली।।१।।
पानीआ बिनु मीनु तलफै।।
ऐसे राम नामा बिनु बापुरो नामा।।१।। रहाउ।।
जैसे गाइ का बाछा छूटला।।
थन चोखता माखनु घूटला।।२।।
नामदेउ नाराइनु पाइआ।।
गुरु भेटत अलखु लखाइआ।।३।।
जैसे बिखै हेत पर नारी।।
ऐसे नामे प्रीति मुरारी।।४।।
जैसे तापते निरमल घामा।।
तैसे राम नामा बिनु बापुरो नामा।।५।।४।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ८७३-८७४)

शब्द - २७

रागु गोंड बाणी नामदेउ जीउ की घरु २

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

हरि हरि करत मिटे सभि भरमा।।
हरि को नामु लै ऊतम धरमा।।
हरि हरि करत जाति कुल हरी।।
सो हरि अंधुले की लाकरी।।१ ।।
हरए नमसते हरए नमह।।
हरि हरि करत नहीं दुखु जमह।।१ ।। रहाउ।।
हरि हरनाकस हरे परान।।
अजैमल कीओ बैकुंठहि थान।।
सूआ पड़ावत गनिका तरी।।
सो हरि नैनहु की पूतरी।।२ ।।
हरि हरि करत पूतना तरी।।
बाल घातनी कपटहि भरी।।
सिमरन द्रोपद सुत उधरी।।
गऊतम सती सिला निसतरी।।३ ।।
केसी कंस मथनु जिनि कीआ।।

जीअ दानु काली कउ दीआ।।
प्रणवै नामा ऐसो हरी।।
जासु जपत भै अपदा टरी।।४।।१।।५।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ८७४)

शब्द - २८

रागु गोंड बाणी नामदेउ जीउ की घरु २

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

भैरउ भूत सीतला धावै।।
खर बाहनु उहु छारु उड़ावै।।१।।
हउ तउ एकु रमईआ लैहउ।।
आन देव बदलावनि दैहउ।।१।। रहाउ।।
सिव सिव करते जो नरु धिआवै।।
बरद चढे डउरू ढमकावै।।२।।
महा माई की पूजा करै।।
नर सै नारि होइ अउतरै।।३।।
तू कहीअत ही आदि भवानी।।
मुकति की बरीआ कहा छपानी।।४।।
गुरमति राम नाम गहु मीता।।
प्रणवै नामा इउ कहै गीता।।५।।२।।६।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ८७४)

शब्द - २९

रागु गोंड बाणी नामदेउ जीउ की घरु २

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

।। बिलावलु गोंड।।

आजु नामे बीठलु देखिआ मूरख को समझाऊ रे।। रहाउ।।

पांडे तुमरी गाइत्री लोधे का खेतु खाती थी।।
लै करि ठेगा टगरी तोरी लांगत लांगत जाती थी।।१।।

पांडे तुमरा महादेउ धउले बलद चड़िआ आवतु देखिआ था।।
मोदी के घर खाणा पाका वा का लड़का मारिआ था।।२।।

पांडे तुमरा रामचंदु सो भी आवतु देखिआ था।।
रावन सेती सरबर होई घर की जोइ गवाई थी।।३।।

हिंदू अंन्हा तुरकू काणा।
दुहां ते गिआनी सिआणा।।
हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति।।
नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति।।४।।३।।७।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ८७४-८७५)

शब्द - ३०

बाणी नामदेउ जीउ की रामकली घरु १

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

आनीले कागदु काटीले गूडी आकास
मधे भरमीअले।
पंच जना सिउ बात बतऊआ चीतू सु
डोरी राखीअले।।१।।
मनु राम नामा बेधीअले।।
जैसे कनिक कला चितु मांडीअले।।१।। रहाउ।।
आनीले कुंभु भराईले ऊदक राज कुआरि पुरंदरीए।।
हसत बिनोद बीचार करती है चीतु सु
गागरि राखीअले।।२।।
मंदरु एकु दुआर दस जा के गऊ चरावन
छाडीअले।।
पांच कोस पर गऊ चरावत चीतु सु
बछरा राखीअले।।३।।
कहत नामदेउ सुनहु तिलोचन बालकु
पालन पउढीअले।।
अंतरि बाहरि काज बिरूधी चीतु सु
बारिक राखीअले।।४।।१।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ९७२)

शब्द - ३१

बाणी नामदेउ जीउ की रामकली घरु १

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

वेद पुरान सासत्र आनंता गीत कबित न गावउगो।।
अखंड मंडल निरंकार महि अनहद
बेनु बजावउगो।।१ ।।
बैरागी रामहि गावउगो।।
सबदि अतीत अनाहिदि राता आकुल कै
घरि जाउगो।।१ ।। रहाउ।।
इड़ा पिंगुला अउरु सुखमना पउनै वंधि रहाउगो।।
चंदु सूरजु दुइ सम करि राखउ ब्रहम जोति
मिल जाउगो।।२ ।।
तीरथ देखि न जल महि पैसउ जीअ जंत
न सतावउगो।।
अठसिठ तीरथ गुरु दिखाए घट ही
भीतरि नाउगे।।३ ।।
पंच सहाई जन की सोभा भलो भलो न कहावउगो।।
नामा कहै चितु हरि सिउ राता सुंन
समाधि समाउगो।।४।।२ ।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ९७२-९७३)

शब्द - ३२

बाणी नामदेउ जीउ की रामकली घरु १

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

माइ न होती बापु न होता करमु न होती काइआ।।
हम नहीं होते तुम नहीं होते कवनु
कहां ते आइआ।।१।।
राम कोइ न किस ही केरा।।
जैसे तरवरि पंखि बसेरा।।१।। रहाउ।।
चंदु न होता सुरु न होता पानी पवनु मिलाइआ।।
सासतु न होता बेदु न होता करमु कहां
ते आइआ।।२।।
खेचर भूचर तुलसी माला गुर परसादी पाइआ।।
नामा प्रणवै परम ततु है
सतिगुर होइ लखाइआ।।३।।३।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ९७३)

शब्द - ३३

बाणी नामदेउ जीउ की रामकली घरु २

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

बानारसी तपु करै उलटि
तीरथ मरै अगनि दहै।।

काइआ कलपु कीजै।।
असुमेध जगु कीजै सोना गरभ दानु दीजै राम
नाम सरि तऊ न पूजै।।१।।
छोडि छोडि रे पाखंडी मन कपटु न कीजै।।
हरि का नामु नित नितहि लीजै।।१।। रहाउ।।
गंगा जउ गोदावरि जाईऐ कुंभि जउ केदार
नाईऐ गोमती सहस गऊ दानु कीजै।।
कोटि जउ तीरथ करै तनु जउ हिवाले गारै राम
नाम सरि तऊ न पूजै।।२।।
असु दान गज दान सिहजा नारी भूमि दान
ऐसो दानु नित नितहि कीजै।।
आतम जउ निरमाइलु कीजै आप बराबरि कंचनु
दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै।।३।।
मनहि न कीजे रोसु जमहि न दीजै दोसु
निरमल निरबाण पदु चीन्हि लीजै।।
जसरथ राइ नंदु राजा मेरा राम चंदु प्रणवै नामा
ततु रसु अंम्रितु पीजै।।४।।४।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ९७३)

शब्द - ३४

माली गउड़ा बाणी भगत नामदेव जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

धनि धनि ओ राम बेनु बाजै।।
मधुर मधुर धुनि अनहत गाजै।।१।। रहाउ।।
धनि धनि मेघा रोमावली।।
धनि धनि क्रिसन ओढै कांबली।।१।।
धनि धनि तू माता देवकी।।
जिह ग्रिह रमईआ कवलापती।।२।।
धनि धनि बन खंड बिंद्राबना।।
जह खेलै स्री नाराइना।।३।।
बेनु बजावै गोधुन चरै।।
नामे का सुआमी आनद करै।।४।।१।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ९८८)

शब्द - ३५

माली गउड़ा बाणी भगत नामदेव जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

मेरो बापु माधउ तू धनु केसो
सांवलीओ बीठुलाइ।।१।। रहाउ।।

कर धरे चक्र बैकुंठ ते आए गज हसती के
प्रान उधारीअले।।
दुहसासन की सभा द्रोपती अंबर लेत
उबारीअले।।१।।
गोतम नारि अहलिआ तारी पावन केतक तारीअले।।
ऐसा अधमु अजाति नामदेउ तउ सरनागति
आईअले।।२।।२।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ९८८)

शब्द - ३६

माली गउड़ा बाणी भगत नामदेव जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै।।
राम बिना को बोलै रे।।१।। रहाउ।।
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे।।
असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु
समाना रे।।१।।
एकल चिंता राखु अनंता अउर तजहु सभ
आसा रे।।
प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकुरु को
दासा रे।।२।।३।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ९८८)

शब्द - ३७

रागु मारु बाणी नामदेउ जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

चारि मुकति चारै सिधि मिलि के दूलह प्रभ की सरनि परिओ।।
मुकति भइओ चउहूं जुग जानिओ जसु कीरति माथै छत्रु धरिओ।।१।।
राजा राम जपत को को न तरिओ।।
गुर उपदेसि साध की संगति भगतु भगतु ता को नामु परिओ।।१।। रहाउ।।
संख चक्र माला तिलकु बिराजित देखि प्रतापु जमु डरिओ।।
निरभउ भए राम बल गरजित जनम मरन संताप हिरिओ।।२।।
अंबरीक कउ दीओ अभै पदु राजु भभीखन अधिक करिओ।।
नउ निधि ठाकुरि दई सुदामै ध्रुअ अटलु अजहू न टरिओ।।३।।
भगत हेति मारिओ हरनाखसु नरसिंघ रूप होइ देह धरिओ।।

नामा कहै भगति बसि केसव अजहूं बलि के दुआर खरो।।४।।१।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ११०५)

शब्द - ३८

भैरउ बाणी नामदेउ जीउ की घरु १

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

रे जिहबा करउ सत खंड।।
जामि न उचरसि स्री गोबिंद।।१।।
रंगी ले जिहबा हरि कै नाइ।।
सुरंग रंगीले हरि हरि धिआइ।।१।। रहाउ।।
मिथिआ जिहबा अवरें काम।।
निरबाण पदु इकु हरि को नामु।।२।।
असंख कोटि अन पूजा करी।।
एक न पूजसि नामै हरी।।३।।
प्रणवै नामदेउ इहु करणा।।
अनंत रूप तेरे नाराइणा।।४।।१।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ११६३)

शब्द - ३९

भैरउ बाणी नामदेउ जीउ की घरु १

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

पर धन पर दारा परहरी।।
ता कै निकटि बसै नरहरी।।१।।
जो न भजंते नाराइणा।।
तिन का मै न करउ दरसना।।१।। रहाउ।।
जिन कै भीतरि है अंतरा।।
जैसे पसु तैसे ओइ नरा।।२।।
प्रणवति नामदेउ नाकहि बिना।।
ना सोहै बतीस लखना।।३।।२।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ११६३)

शब्द - ४०

भैरउ बाणी नामदेउ जीउ की घरु १

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

दूधु कटोरे गडवै पानी।।
कपल गाइ नामै दुहि आनी।।१।।
दूधु पीउ गोबिंदे राइ।। दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइ।।
नाही त घर को बापु रिसाइ।।१।। रहाउ।।
सोइन कटोरी अंम्रित भरी।।

लै नामै हरि आगै धरी।।२।।
एकु भगतु मेरे हिरदे बसै।।
नामे देखि नराइनु हसै।।३।।
दूधु पीआइ भगतु घरि घइआ।।
नामे हरि का दरसनु भइआ।।४।।३।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ११६३-११६४)

शब्द - ४१

भैरउ बाणी नामदेउ जीउ की घरु १

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

मै बउरी मेरा रामु भतारु।।
रचि रचि ता कउ करउ सिंगारु।।१।।
भले निंदउ भले निंदउ भले निंदउ लोगु।।
तनु मनु राम पिआरे जोगु।।१।। रहाउ।।
बादु बिबादु काहू सिउ न कीजै।।
रसना राम रसाइनु पीजै।।२।।
अब जीअ जानि ऐसी बनि आई।।
मिलउ गुपाल नीसानु बजाई।।३।।
उसतति निंदा करै नरु कोई।।
नामे स्रीरंगु भेटल सोई।।४।।४।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ११६४)

शब्द - ४२

भैरउ बाणी नामदेउ जीउ की घरु १

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

कबहू खीरि खाड घीउ न भावै।।
कबहू घर घर टूक मगावै।।
कबहू कूरनु चने बिनावै।।१ ।।
जिउ रामु राखै तिउ रहीऐ रे भाई।।
हरि की महिमा किछु कथनु न जाई।।१ ।। रहाउ।।
कबहू तुरे तुरंग नचावै।।
कबहू पाइ पनहीओ न पावै।।२ ।।
कबहू खाट सुपेदी सुवावै।।
कबहू भूमि पैआरु न पावै।।३ ।।
भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै।।
जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै।।४।।५ ।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ११६४)

शब्द - ४३

भैरउ बाणी नामदेउ जीउ की घरु १

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ।।
भगति करत नामा पकरि उठाइआ।।१ ।।

हीनड़ी जाति मेरी जादिम राइआ।।
छीपे के जनमि काहे कउ आइआ।।१।। रहाउ।।
लै कमली चलिओ पलटाइ।।
देहुरै पाछै बैठा जाइ।।२।।
जिउ जिउ नामा हरि गुण उचरै।।
भगत जनां कउ देहुरा फिरै।।३।।६।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ११६४)

शब्द - ४४

भैरउ नामदेउ जीउ घरु २

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

जैसी भूखे प्रीति अनाज।।
त्रिखावंत जल सेती काज।।
जैसी मूड़ कुटंब पराइण।।
ऐसी नामे प्रीति नराइण।।१।।
नामे प्रीति नाराइण लागी।।
सहज सुभाइ भइओ बैरागी।।१।। रहाउ।।
जैसी पर पुरखा रत नारी।।
लोभी नरु धन का हितकारी।।
कामी पुरख कामनी पिआरी।।
ऐसी नामे प्रीति मुरारी।।२।।

साई प्रीति जि आपे लाए।।
गुर परसादी दुबिधा जाए।।
कबहु न तूटसि रहिआ समाइ।।
नामे चितु लाइआ सचि नाइ।।३।।
जैसी प्रीति बारिक अरु माता।।
ऐसा हरि सेती मनु राता।।
प्रणवै नामदेउ लागी प्रीति।।
गोबिंदु बसै हमारै चीति।।४।।१।।७।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ११६४)

शब्द - ४५

भैरउ नामदेउ जीउ घरु २

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

घर की नारि तिआगै अंधा।।
पर नारी सिउ घालै धंधा।।
जैसे सिंबलु देखि सूअर बिगसाना।।
अंत की बार मूआ लपटाना।।१।।
पापी का घरु अगने माहि।।
जलत रहै मटिवै कब नाहि।।१।। रहाउ।।
हरि की भगति न देखै जाइ।।
मारगु छोडि अमारगि पाइ।।

मूलहु भूला आवै जाइ।।
अंम्रितु डारि लादि बिखु खाइ।।२।।
जिउ बेस्वा के परै अखारा।।
कापरु पहिरि करहि सींगारा।।
पूरे ताल निहाले सास।।
वा के गले जम का है फास।।३।।
जा के मसतकि लिखिओ करमा।।
सो भजि परि है गुर की सरना।।
कहत नामदेउ इहु बीचारु।।
इन विधि संतहु उतरहु पारि।।४।।२।।८।।
(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ११६४-११६५)

शब्द - ४६

भैरउ नामदेउ जीउ घरु २

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

संडा मरका जाइ पुकारे।।
पड़ै नहीं हम ही पचि हारे।।
रामु कहै कर ताल बजावै चटीआ सभै बिगारे।।१।।
राम नामा जपिबो करै।।
हिरदै हरि जी को सिमरनु धरै।।१।। रहाउ।।
बसुधा बसि कीनी सभ राजे बिनती करै पटरानी।।

पूतु प्रहिलादु कहिआ नहीं मानै तिनि तउ
अउरै ठानी।।२।।
दुसट सभा मिलि मंतर उपाइआ करसह
अउध घनेरी।।
गिरि तर जल जुआला भै राखिओ राजा रामि
माइआ फेरी।।३।।
काढि खड़गु कालु भै कोपिओ मोहि बताउ
जु तुहि राखै।।
पीत पीतांबर त्रिभवण धणी थंभ माहि
हरि भाखै।।४।।
हरनाखसु जिनि नखह बिदारिओ सुरि नर कीए सनाथा।।
कहि नामदेउ हम नरहरि धिआवह रामु अभै
पद दाता।।५।।३।।१।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ११६५)

शब्द - ४७

भैरउ नामदेउ जीउ घरु २

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

सुलतानु पूछै सुनु बे नामा।।
देखउ राम तुम्हारे कामा।।१।।
नामा सुलताने बाधिला।।

देखउ तेरा हरि बीठुला।।१।। रहाउ।।
बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ।।
नातरु गरदनि मारउ ठांइ।।२।।
बादिसाह ऐसी किउ होइ।।
बिसमिलि कीआ न जीवै कोइ।।३।।
मेरा कीआ कछू न होइ।।
करि है रामु होइ है सोइ।।४।।
बादिसाहु चढ़िओ अहंकारि।।
गज हसती दीनो चमकारि।।५।।
रुदनु करै नामे की माइ।।
छोडि रामु की न भजहि खुदाइ।।६।।
न हउ तेरा पूंगड़ा न तू मेरी माइ।।
पिंडु पड़ै तउ हरि गुन गाइ।।७।।
करै गजिंदु सुंड की चोट।।
नामा उबरै हरि की ओट।।८।।
काजी मुलां करहि सलामु।।
इनि हिंदू मेरा मलिआ मानु।।९।।
बादिसाह बेनती सुनेहु।।
नामे सर भरि सोना लेहु।।१०।।
मालु लेउ तउ दोजकि परउ।।
दीनु छोडि दुनीआ कउ भरउ।।११।।

पावहु बेड़ी हाथहु ताल।।
नामा गावै गुन गोपाल।।१२।।
गंग जमुन जउ उलटी बहै।।
तउ नामा हरि करता रहै।।१३।।
सात घड़ी जब बीती सुणी।।
अजहु न आइओ त्रिभवण धणी।।१४।।
पाखंतण बाज बजाइला।।
गरुड़ चढ़े गोबिंद आइला।।१५।।
अपने भगत परि की प्रतिपाल।।
गरुड़ चढ़े आए गोपाल।।१६।।
कहहि त धरणि इकोडी करउ।।
कहहि त ले करि ऊपरि धरउ।।१७।।
कहहि त मुई गऊ देउ जीआइ।।
सभु कोई देखै पतीआइ।।१८।।
नामा प्रणवै सेल मसेल।।
गऊ दुहाई बछरा मेलि।।१९।।
दूधहि दुहि जब मटुकी भरी।।
ले बादिसाह के आगे धरी।।२०।।
बादिसाहु महल महि जाइ।।
अउघट की घट लागी आइ।।२१।।
काजी मुलां बिनती फुरमाइ।।

बखसी हिंदू मै तेरी गाइ।।२२।।
नामा कहै सुनहु बादिसाह।।
इहु किछु पतीआ मुझै दिखाइ।।२३।।
इस पतीआ का इहै परवानु।।
साचि सीलि चालहु सुलितानु।।२४।।
नामदेउ सभ रहिआ समाइ।।
मिलि हिंदू सभ नामे पहि जाहि।।२५।।
जउ अब की बार न जीवै गाइ।।
त नामदेव का पतीआ जाइ।।२६।।
नामे की कीरति रही संसारि।।
भगत जनां ले उधरिआ पारि।।२७।।
सगल कलेस निंदक भइआ खेदु।।
नामे नाराइन नाही भेदु।।२८।।१।।१०।। घरु२।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ११६५-११६६)

शब्द - ४८

भैरउ नामदेउ जीउ घरु २

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

जउ गुरदेउ त मिलै मुरारि।।
जउ गुरदेउ त उतरै पारि।।
जउ गुरदेउ त बैकुंठ तरै।।

जउ गुरदेउ त जीवत मरै।।१ ।।
सति सति सति सति सति गुरदेव।।
झूठु झूठु झूठु झूठु आन सभ सेव।।१ ।। रहाउ।।
जउ गुरदेउ त नामु द्रिड़ावै।।
जउ गुरदेउ न दह दिस धावै।।
जउ गुरदेउ पंच ते दूरि।।
जउ गुरदेउ न मरिबो झूरि।।२ ।।
जउ गुरदेउ त अंम्रित बानी।।
जउ गुरदेउ त अकथ कहानी।।
जउ गुरदेउ त अंम्रित देह।।
जउ गुरदेउ नामु जपि लेहि।।३ ।।
जउ गुरदेउ भवन त्रै सुझै।।
जउ गुरदेउ ऊच पद बूझै।।
जउ गुरदेउ त सीसु अकासि।।
जउ गुरदेउ सदा सावासि।।४ ।।
जउ गुरदेउ सदा बैरागी।।
जउ गुरदेउ पर निंदा तिआगी।।
जउ गुरदेउ बुरा भला एक।।
जउ गुरदेउ लिलाटहि लेख।।५ ।।
जउ गुरदेउ कंधु नही हिरै।।
जउ गुरदेउ देहुरा फिरै।।

जउ गुरदेउ त छापरि छाई।।
जउ गुरदेउ सिहज निकसाई।।६।।
जउ गुरदेउ त अठसठि नाइआ।।
जउ गुरदेउ तनि चक्र लगाइआ।।
जउ गुरदेउ त दुआदस सेवा।।
जउ गुरदेउ सभै बिखु मेवा।।७।।
जउ गुरदेउ त संसा टूटै।।
जउ गुरदेउ त जम ते छूटै।।
जउ गुरदेउ ते भउजल तरै।।
जउ गुरदेउ जनमि न मरै।।८।।
जउ गुरदेउ अठदस बिउहार।।
जउ गुरदेउ अठारह भार।।
बिनु गुरदेउ अवर नहीं जाई।।
नामदेउ गुर की सरणाई।।१।।१।।२।।११।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ११६६-११६७)

शब्द - ४९

भैरउ नामदेउ जीउ घरु २

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

आउ कलंदर केसवा।।
करि अबदाली भेसवा।। रहाउ।।

जिनि आकास कुलह सिरि कीनी कउसै
सपत पयाला।।
चमर पोस का मंदरु तेरा इह विधि बने गुपाला।।१।।
छपन कोटि का पेहनु तेरा सोलह सहस इजारा।।
भार अठारह मुदगरु तेरा सहनक सभ संसारा।।२।।
देही महजिदि मनु मउलाना सहज निवाज गुजारै।।
बीबी कउला सउ काइनु तेरा निरंकार
आकारै।।३।।
भगति करत मेरे ताल छिनाए किह पहि
करउ पुकारा।।
नामे का सुआमी अंतरजामी फिरे
सगल बेदेसवा।।४।।१।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ११६७)

शब्द – ५०

बसंतु बाणी नामदेउ जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

साहिबु संकटवै सेवकु भजै।।
चिरंकाल न जीवै दोऊ कुल लजै।।१।।
तेरी भगति न छोडउ भावै लोगु हसै।।
चरन कमल मेरे हीअरे बसैं।।१।। रहाउ।।

जैसे अपने धनहि प्रानी मरनु मांडे।।
तैसे संत जनां राम नामु न छाडैं।।२।।
गंगा गइआ गोदावरी संसार के कामा।।
नाराइणु सुप्रसंन होइ त सेवकु नामा।।३।।१।।
(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ११९५-११९६)

शब्द - ५१

बसंतु बाणी नामदेउ जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

लोभ लहरि अति नीझर बाजै।।
काइआ डूबै केसवा।।१।।
संसारु समुंदे तारि गोबिंदे।।
तारि लै बाप बीठुला।।१।। रहाउ।।
अनिल बेड़ा हउ खेवि न साकउ।।
तेरा पारु न पाइआ बीठुला।।२।।
होहु दइआलु सतिगुरु मेलि तू मो कउ।।
पारि उतारे केसवा।।३।।
नामा कहै हउ तरि भी न जानउ।।
मो कउ बाह देहि बाह देहि बीठुला।।४।।२।।
(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ११९६)

शब्द – ५२

बसंतु बाणी नामदेउ जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

सहज अवलि धूड़ि मणी गाडी चालती।।
पीछे तिनका लै करि हांकती।।१।।
जैसे पनकत थ्रूटिटि हांकती।।
सरि धोवन चाली लाडुली।।१।। रहाउ।।
धोबी धोवै बिरह बिराता।।
हरि चरन मेरा मनु राता।।२।।
भणति नामदेउ रमि रहिआ।।
अपने भगत पर करि दइआ।।३।।३।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ ११९६)

शब्द – ५३

सारंग बाणी नामदेउ जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

काएं रे मन बिखिआ बन जाइ।।
भूलौ रे ठगमूरी खाइ।।१।। रहाउ।।
जैसे मीनु पानी महि रहै।।
काल जाल की सुधि नहीं लहै।।
जिहबा सुआदी लीलित लोह।।

ऐसे कनिक कामनी बाधिओ मोह।।१।।
जिउ मधु माखी संचै अपार।।
मधु लीनो मुखि दीनी छारु।।
गऊ बाछ कउ संचै खीरु।।
गला बांधि दुहि लेइ अहीरु।।२।।
माइआ कारनि स्रमु अति करै।।
सो माइआ लै गाडै धरै।।
अति संचै समझौ नहीं मूढ़।।
धनु धरती तनु होइ गइओ धूड़ि।।३।।
काम क्रोध त्रिसना अति जरै।।
साधसंगति कबहू नहीं करै।।
कहत नामदेउ ता ची आणि।।
निरभै होइ भजीऐ भगवान।।४।।१।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ १२५२)

शब्द - ५४

सारंग बाणी नामदेउ जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

बदहु की न होड माधउ मो सिउ।।
ठाकुर ते जनु जन ते ठाकुरु खेलु परिओ है
तो सिउ।।१।। रहाउ।।

आपन देउ देहुरा आपन आप लगावै पूजा।।
जल ते तरंग तरंग ते है जलु कहन सुनन कउ दूजा।।१ ।।
आपहि गावै आपहि नाचै आपि बजावै तूरा।।
कहत नामदेउ तूं मेरो ठाकुरु
जनु ऊरा तू पूरा।।२।।२।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ १२५२)

शब्द - ५५

सारंग बाणी नामदेउ जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

दास अनिंन मेरो निज रूप।।
दरसन निमख ताप त्रई मोचन परसत मुकति करत ग्रिह कूप।।१ ।। रहाउ।।
मेरी बांधी भगतु छडावै बांधै भगतु न छूटै मोहि।।
एक समै मो कउ गहि बांधै तउ फुनि मो पै
जबाबु न होइ।।१ ।।
मै गुन बंध सगल की जीवनि
मेरी जीवनि मेरे दास।।
नामदेव जा के जीअ ऐसी
तैसो ता कै प्रेम प्रगास।।२।।३।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ १२५२-१२५३)

शब्द - ५६

रागु मलार बाणी भगत नामदेव जीउ की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

सेवीले गोपाल राइ अकुल निरंजन।।
भगति दानु दीजै जाचहि संत जन।।१।। रहाउ।।
जां चै घरि दिग दिसै सराइचा बैंकुठ भवन
चित्रसाला सपत लोक सामानि पूरीअले।।
जां चै घरि लछिमी कुआरी चंदु सूरजु दीवड़े
कउतकु कालु बपुड़ा कोटवालु सु करा सिरी।।
सु ऐसा राजा श्री नरहरी।।१।।
जां चै घरि कुलालु ब्रहमा चतुर मुखु डांवड़ा
जिनि बिस्व संसारु राचीले।।
जां के घरि ईसरु बावला जगत गुरु तत
सारखा गिआनु भाखीले।।
पापु पुंनु जां चै डांगीआ दुआरै चित्र गुपतु लेखीआ।।
धरम राइ परुली प्रतिहारु।।
सो ऐसा राजा स्री गोपालु।।२।।
जां चै घरि गण गंधरब रिखी बपुड़े
ढाढीआ गावंत आछै।।
सरब सासत्र बहु रूपीआ अनगरुआ आखाड़ा मंडलीक
बोल बोलहि काछे।।

चउर ढूल जां चै है पवणु।।
चेरी सकति जीति ले भवणु।।
अंड टूक जा चै भसमती।।
सुो ऐसा राजा त्रिभवण पती।।३।।
जां चै घरि कूरमा पालु सहस्र फनी
बासकु सेज वालूआ।।
अठारह भार बनासपती मालणी छिनवै करोड़ी
मेघ माला पाणीहारीआ।।
नख प्रसेव जा चै सुरसरी।।
सपत समुंद जां चै घड़थली।।
ऐते जीअ जां चै वरतणी।।
सुो ऐसा राजा त्रिभवण धणी।।४।।
जां चै घरि निकट वरती अरजनु ध्रू प्रहलादु
अंबरीकु नारदु नेजै सिध बुध गण गंधरब
बानवै हेला।।
ऐते जीअ जां चै हहि घरी।।
सरब बिआपिक अंतर हरी।।
प्रणवै नामदेउ तां ची आणि।।
सगल भगत जा चै नीसाणि।।५।।१।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ, १२९२)

शब्द - ५७

रागु मलार बाणी भगत नामदेव जीउ की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

मो कउ तूं न बिसारि तू न बिसारि।।
तू न बिसारे रामईआ।।१।। रहाउ।।
आलावंती इहु भ्रमु जो है मुझ ऊपरि सभ कोपिला।।
सूदु सूदु करि मारि उठाइओ
कहा करउ बाप बीठुला।।१।।
मूए हूए जउ मुकति देहुगे मुकति न जानै कोइला।।
ए पंडीआ मो कउ ढेढ कहत
तेरी पैज पिछंउडी होइला।।२।।
तू जु दइआलु क्रिपालु कहीअतु हैं
अतिभुज भइओ अपारला।।
फेरि दीआ देहुरा नामे कउ
पंडीअन कउ पिछवारला।।३।।२।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ १२९२-१२९३)

शब्द - ५८

रागु कानड़ा बाणी नामदेव जीउ की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

ऐसो रम राइ अंतरजामी।।

जैसे दरपन माहि बदन परवानी।।१।। रहाउ।।
बसै घटा घट लीप न छीपै।।
बंधन मुकता जातु न दीसै।।१।।
पानी माहि देखु मुखु जैसा।।
नामे को सुआमी बीठलु ऐसा।।२।।१।।
(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ १३१८)

शब्द - ५९

प्रभाती बाणी भगत नामदेव जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

मन की बिरथा मनु ही जानै कै बूझल आगै कहीऐ।।
अंतरजामी रामु रवांई मै डरु कैसे चहीऐ।।१।।
बेधीअले गोपाल गोुसाई।।
मेरा प्रभु रविआ सरबे ठाई।।१।। रहाउ।।
मानै हाटु मानै पाटु मानै है पासारी।
मानै बासै नाना भेदी भरमतु है संसारी।।२।।
गुर कै सबदि एहु मनु राता दुबिधा सहजि समाणी।।
सभो हुकमु हुकमु है आपे
निरभउ समतु बीचारी।।३।।
जो जन जानि भजहि पुरखोतमु
ता ची अबिगतु बाणी।।

नामा कहै जगजीवनु पाइआ
हिरदै अलख बिडाणी।।४।।१।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ १३५०-१३५१)

शब्द - ६०

प्रभाती बाणी भगत नामदेव जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

आदि जुगादि जुगादि जुगो जुगु
ता का अंतु न जानिआ।।
सरब निरंतरि रामु रहिआ रवि
ऐसा रुपु बखानिआ।।१।।
गोबिदु गाजै सबदु बाजै।।
आनद रूपी मेरो रामईआ।।१।। रहाउ।।
बावन बीखू बानै बीखे बासु ते सुख लागिला।।
सरबे आदि परमलादि कासट चंदनु भैइला।।२।।
तुम्ह चे पारसु हम चे लोहा संगे कंचनु भैइला।।
तू दइआलु रतनु लालु
नामा साचि समाइला।।३।।२।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ १३५१)

शब्द - ६१

प्रभाती बाणी भगत नामदेव जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

अकुल पुरुख इकु चलितु उपाइआ।।
घटि घटि अंतरि ब्रहमु लुकाइआ।।१।।
जीअ की जोति न जानै कोई।।
तै मै कीआ सु मालूमु होइ।।१।। रहाउ।।
जिउ प्रगासिआ माटी कुंभेउ।।
आप ही करता बीठुलु देउ।।२।।
जीअ का बंधनु करमु बिआपै।।
जो किछु कीआ सु आपै आपै।।३।।
प्रणवति नामदेउ इहु जीउ चितवै सु लहै।।
अमरु होइ सद आकुल रहै।।४।।३।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ १३५९)

यह पंडीया मुझे ढेढ कहता है

भारतीय वर्ण वंड परंपरा के अनुसार सतिगुरु नामदेव और सतिगुरु कबीर जी महाराज कथित शूद्र वर्ण जो कि आज का OBC वर्ग है में से थे। भगवान् वाल्मीक जिनका वर्णन सतिगुरु रविदास जी ने अपनी वाणी में किया है और सतिगुरु रविदास जी खुद कथित शुद्र से निमन वर्ग जिसको अवर्ण और अछूत भी कहा गया है वर्ग में से थे। जिसमें आज का SC वर्ग आता है। इन दोनों वर्गों से कथित उच्च जातियों की ओर से अत्यन्त घृणा की जाती थी और इनको प्रभ की पूजा करने की मनाही थी। सतिगुरु नामदेव जब औंधा गाँव ज़िला हिंगोली महाराष्ट के मंदिर में प्रभ को नमस्कार करने गए तो पंडितों ने उनको शूद्र होने के कारण धक्के मार कर बाहर निकाल दिया। तब सतिगुरु जी मंदिर के पीछे जाकर बैठ गए। इस का वर्णन सतिगुरु जी ने अपनी वाणी में इस प्रकार किया है।

सूदु सूदु करि मारि उठाइओ, कहा करउ बाप बीठुला।।.....
मूए हूए जउ मुकति देहुगे, मुकति न जानै कोइला।।
ए पंडीआ मो कउ ढेढ कहत, तेरी पैज पिछंउडी होइला।।

(शब्द नं. 57)

इन पावन वचनों से सतिगुरु नामदेव जी ने वहां पंडितों को कुछ नहीं कहा बल्कि परमात्मा को उलाहना करते हुए कहा कि हे मेरे बीठल पिता इन पंडितों ने मुझे शूद्र-शूद्र बोल कर मंदिर से बाहर निकाला है इनके आगे मेरे अकेले की नहीं चलती अगर आपने मुझको मरने के बाद मुक्ति दी तो इसका किसी को पता नहीं चलेगा। यह पंडित मुझे ढेढ (नीच) कहते हैं। इसमें तो आपकी ही इज्ज़त कम हो रही है क्योंकि क्या आपकी बंदगी करने वाला भी कभी नीच हो सकता है? सेवक की प्रार्थना सुनकर भगवान् ने मंदिर ही घुमा दिया। मंदिर द्वार सतिगुरु नामदेव की तरफ और पिछबाडा पंडितों की और कर दिया।

सतिगुरु नामदेव जी की ओर घूमने वाला नाग नाथ मंदिर शहर औंधा, ज़िला हिंगोली महाराष्ट्र

परम संत नामदेव जी का जन्म कार्तिक शुक्ला एकादशी सम्वत् 1327 (26 अक्तूबर 1270 ई०) दिन रविवार सूर्योदय के समय करढ़ के पास गाँव नरसी बामणी ज़िला सितारा (मराठवाड़ा) महाराष्ट्र में हुआ। गाँव नरसी, कृष्णा नदी के किनारे, कहाड़ रेलवे स्टेशन के पास पूना से मिराज जाने वाली रेलवे लाईन के निकट है। सरकार ने अब ''नरसी बामणी'' का नाम बदलकर ''नरसी नामदेव'' रख दिया है। नरसी नामदेव ज़िला हिंगोली राज्य महाराष्ट्र मैं है। आप के पिता जी का नाम दामाशेट और माता जी का नाम गोना बाई (गोणाई) था। आपका बचपन का नाम 'नामा' था। आपका जन्म छींबा बिरादरी में हुआ और आपका वंश दर्जी का काम करता था। मराठी में दर्जी को 'छींपी' कहते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में आप जी के 61 शब्द 18 रागों में दर्ज हैं। महाराष्ट्र द्वारा प्रकाशित गाथा में अभंगों की संख्या 2392 है। इनमें प्रकाशित अभंगों में से कुछ एक रचनाएँ नामदेव जी की भाषा और विचारधारा से सुमेल नहीं करते।